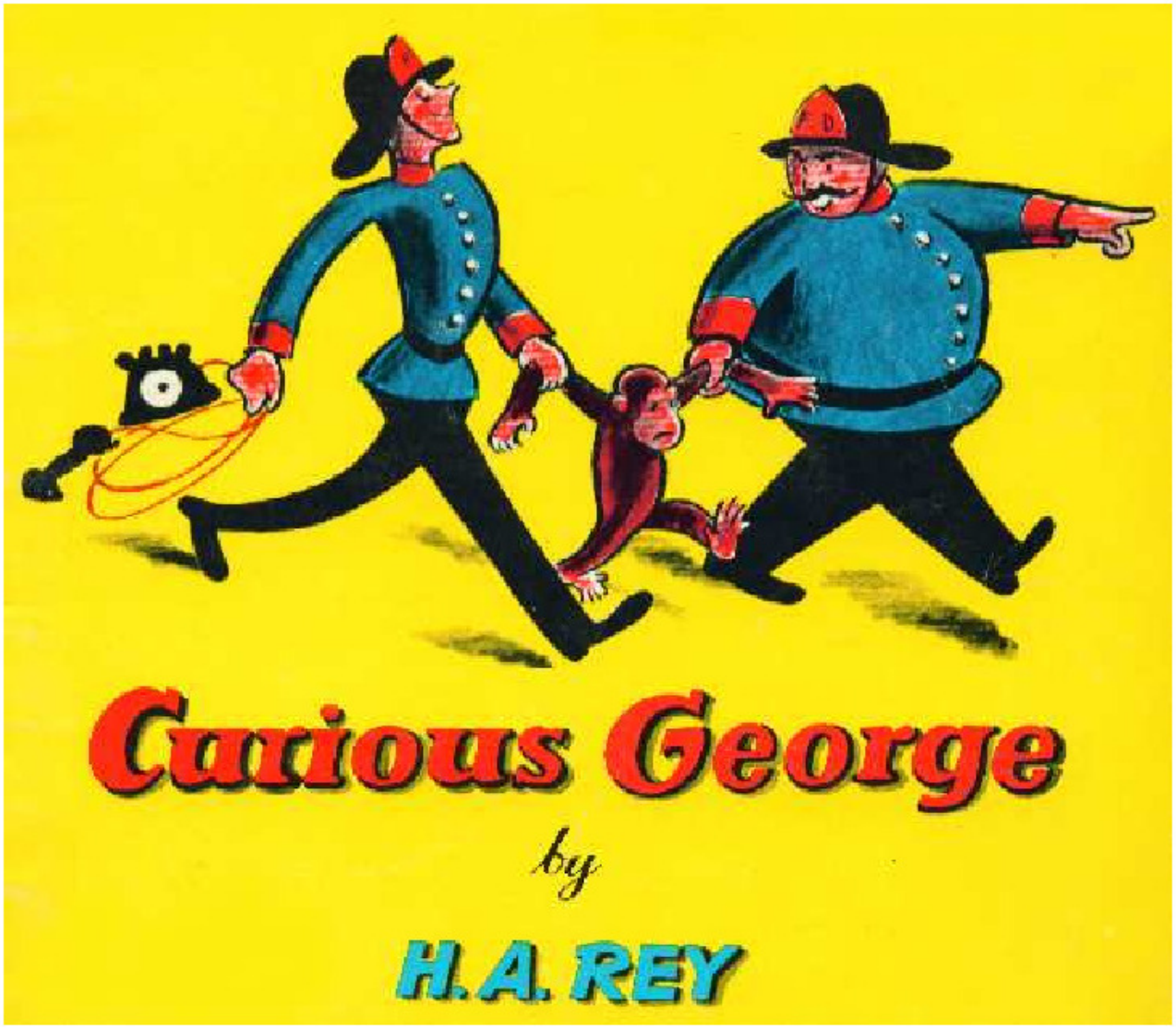

जिज्ञासु जॉर्ज

एच. ए. रे

हिंदी : विदूषक

यह जॉर्ज है.

वो कभी अफ्रीका में रहता था.

वो वहां बहुत खुश था.

जॉर्ज में बस एक ही कमी थी.

वो बहुत जिज्ञासु था.

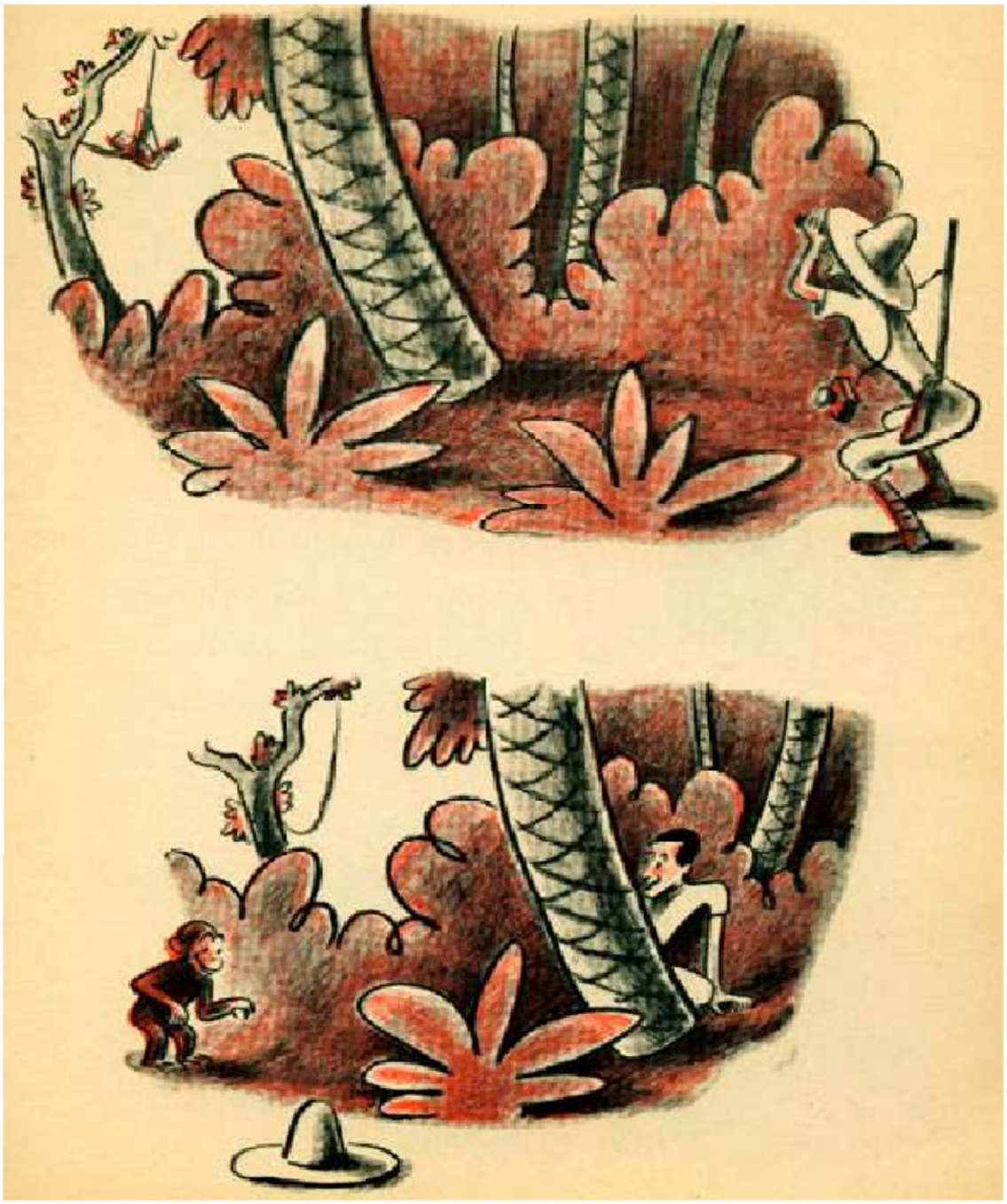

एक दिन जॉर्ज को एक आदमी दिखा.

वो फूस (स्ट्रॉ) की बनी एक बड़ी, पीली टोपी पहने था.

उस आदमी ने भी जॉर्ज को देखा.

“देखने में यह बन्दर कितना अच्छा है,” उसने सोचा, “मैं उसे अपने साथ ले जाऊँगा.”

फिर उस आदमी ने अपनी टोपी ज़मीन पर रख दी.

जॉर्ज बेहद जिज्ञासु था, उसकी हर चीज़ में रूचि थी. वो पेड़ से नीचे उतरा.

जॉर्ज उस बड़ी, पीली टोपी को छूना, देखना चाहता था.

उसने टोपी आदमी के सर पर देखी थी.

head.

“कितना अच्छा लगूंगा मैं इस टोपी को पहन कर,” जॉर्ज ने सोचा.

जॉर्ज ने टोपी को अपने सर पर रखा.

टोपी से जॉर्ज का पूरा सर और मुंह ढँक गया.
टोपी की वजह से जॉर्ज कुछ देख नहीं पाया.

फिर आदमी ने जॉर्ज को उठाया और उसे अपने थैले में डाला.

बेचारा जॉर्ज पकड़ा गया.

पीली टोपी वाले आदमी ने जॉर्ज को एक छोटी नाव में बिठाया.
फिर वो नाव से उसे एक बड़े जहाज़ तक ले गया.
जॉर्ज दुखी और उदास था, पर फिर भी बहुत जिज्ञासु था.

बड़े जहाज़ में काफी हलचल थी.

उस आदमी ने अपनी थैला खोला. जॉर्ज एक स्टूल पर बैठ गया.

तब उस आदमी ने कहा,

“जॉर्ज, मैं तुम्हें एक बड़े शहर के बड़े चिड़ियाघर में ले जाऊँगा.

वहां तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा. अब दौड़ो और खेलो,

पर कोई शरारत मत करना, नहीं तो फंसोगे.”

जॉर्ज ने शरारत न करने का वादा किया.

पर बन्दर जल्दी ही अपना वादा भूल जाते हैं.

जहाज़ की छत पर जॉर्ज को कुछ समुद्री चीलें दिखाई दीं.
“यह चीलें कैसे उड़तीं हैं?”
यह जानने को जॉर्ज बहुत उत्सुक था.
अंत में उसने भी समुद्री चीलों जैसे उड़ने की कोशिश की.
उड़ना देखने में काफी आसान लगा.
परन्तु करते वक्त.....

कुछ और ही हुआ!

पहले जॉर्ज ने यह किया.

फिर यह किया!

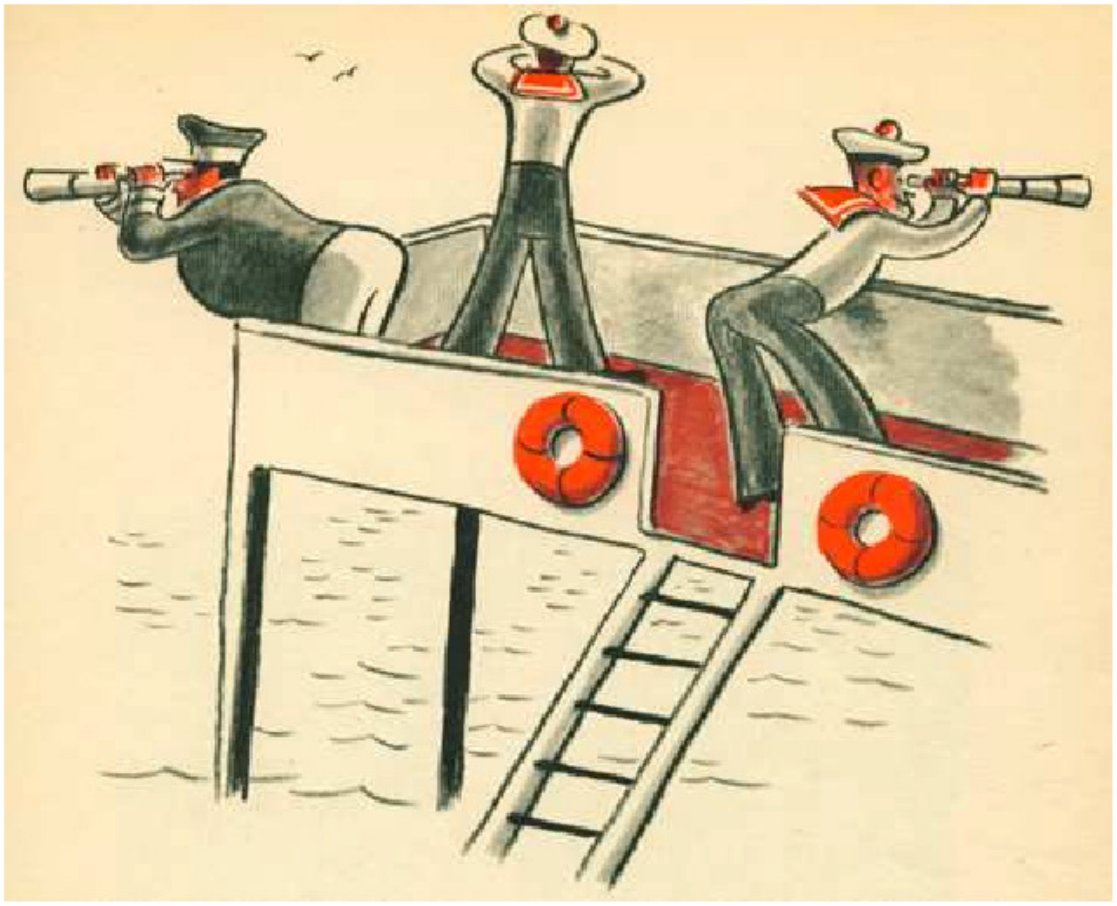

“कहाँ है जॉर्ज?”
नाविकों ने इधर-उधर देखा.
अंत में जॉर्ज उन्हें पानी में
डुबकी खाता हुआ दिखा.
वो हाथ-पैर मारते-मारते
एकदम पस्त हो गया था.

“उसे पानी से निकालो!” नाविक चिल्लाए.

फिर उन्होंने जॉर्ज की ओर एक लाइफ़-बेल्ट फेंकी.

जॉर्ज ने उसे पकड़ा.

अंत में वो सुरक्षित जहाज़ पर वापिस आया.

उसके बाद जॉर्ज ने, एक अच्छा बन्दर बनने की पूरी कोशिश की.
अंत में यात्रा ख़त्म हुई और जहाज़ अपनी मंजिल पर पहुंचा.
जॉर्ज ने उन अच्छे नाविकों से “गुडबाय” कहा.
उसके बाद पीली टोपी वाला आदमी जहाज़ से बाहर उतरकर तट पर आया.
फिर वो आदमी शहर में, अपने घर गया.

भरपेट खाने के बाद
और पाइप पीने के बाद
जॉर्ज को थकान महसूस हुई.

वो पलंग पर लेटा,

और उसे तुरंत नींद आ गई.

अगले दिन सुबह उस आदमी ने चिड़ियाघर को टेलीफोन किया.
जॉर्ज ने उस आदमी को टेलीफोन पर बात करते हुए सुना.
जॉर्ज, टेलीफोन से बहुत प्रभावित हुआ.
कुछ देर बाद आदमी चला गया.
जॉर्ज बहुत जिज्ञासु था.
वो खुद टेलीफोन करना चाहता था.
उसने नंबर मिलाया एक, दो, तीन, चार, पांच, छह, सात.
कितना मज़ेदार है न टेलीफोन!

जॉर्ज ने अनजाने में, फायर ब्रिगेड स्टेशन में फोन किया था!
फायर ब्रिगेड के लोगों ने टेलीफोन करने वाले की खोज की.
“हेल्लो! हेल्लो!” उन्होंने कहा. पर उन्हें कोई जवाब नहीं मिला.
फिर फायर ब्रिगेड वालों ने बड़े नक़्शे पर मालूम किया
कि टेलीफोन कहाँ से आया था.
उन्हें यह नहीं पता था कि यह जॉर्ज की शरारत थी.
उन्हें लगा कि वहां वाकई में आग लगी थी.

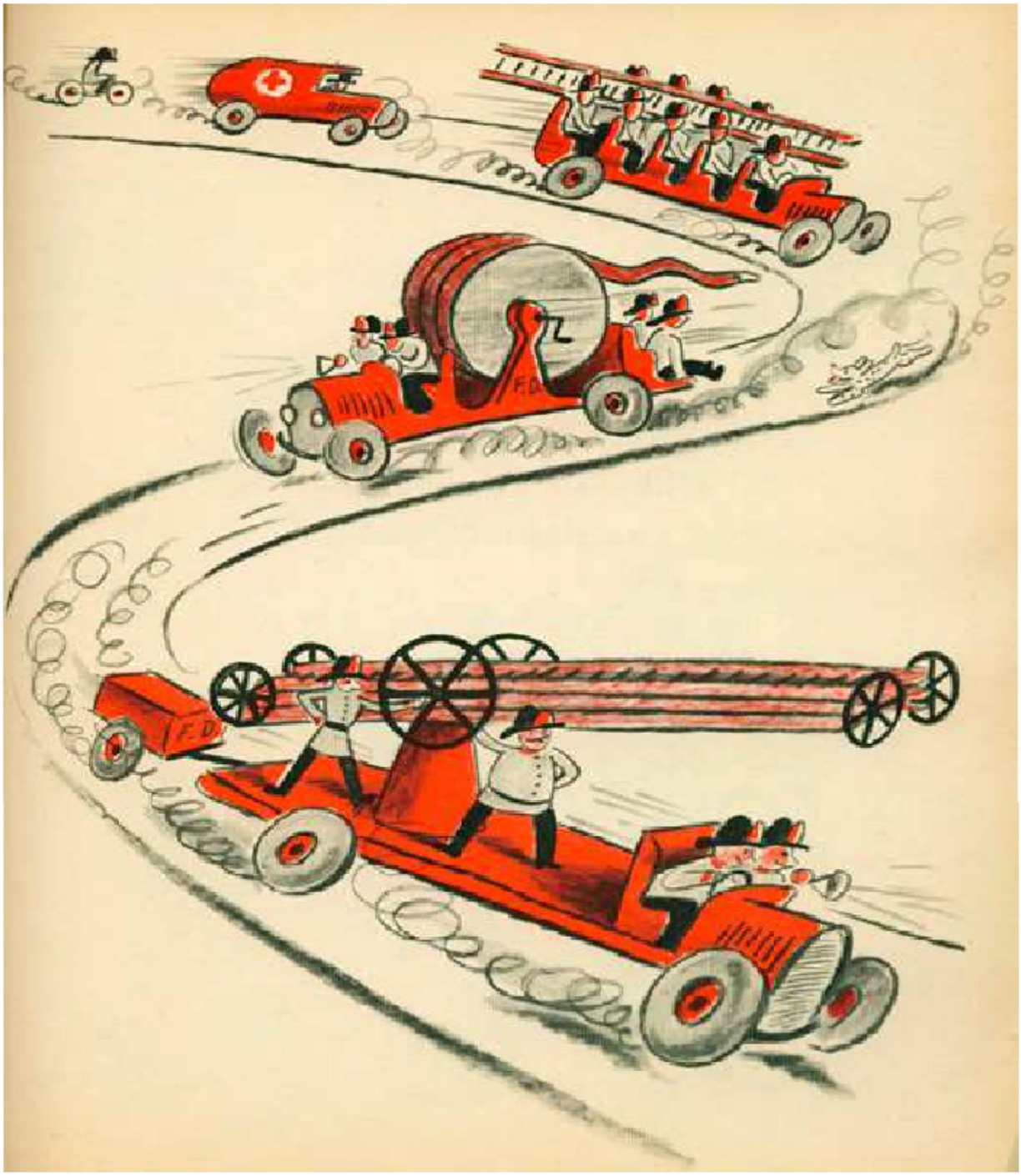

जल्दी! जल्दी! जल्दी!

फायर ब्रिगेड के लोग पानी की लाल गाड़ियों में कूदे

उन्होंने पानी के पाइप लिए, सीढ़ियाँ भीं साथ में लीं.

फायर ब्रिगेड की लाल गाड़ी की घंटी बजी

टन! टन! टन! टन! टन! टन!

रास्ते से हटो! रास्ते से हटो!

जल्दी! जल्दी! जल्दी!

फायर ब्रिगेड के लोग घर में घुसे.
उन्होंने सावधानी से दरवाज़ा खोला. कोई भी आग नहीं!
सिर्फ एक शरारती बन्दर!

“उसे पकड़ो! उसे पकड़ो!,” वो चिल्लाए.
जॉर्ज ने भागने की पूरी कोशिश की.
उसने बहुत प्रयास किया, पर अंत में पकड़ा गया.
क्यूंकि उसका पैर टेलीफोन के तार में फंस गया था.

फिर एक फायरमैन ने जॉर्ज का हाथ पकड़ा
दूसरे मोटे फायरमैन ने जॉर्ज का दूसरा हाथ पकड़ा.
“तुमने फायर ब्रिगेड डिपार्टमेंट को पागल बनाया है,” उन्होंने कहा.
“अब हम तुम्हें जेल की कोठरी में बंद करेंगे
जिससे तुम और कोई नुकसान नहीं पहुँचाओ!”

फायरमैन, जॉर्ज को पकड़ कर ले गए
और उसे जेल की कोठरी में बंद कर दिया.

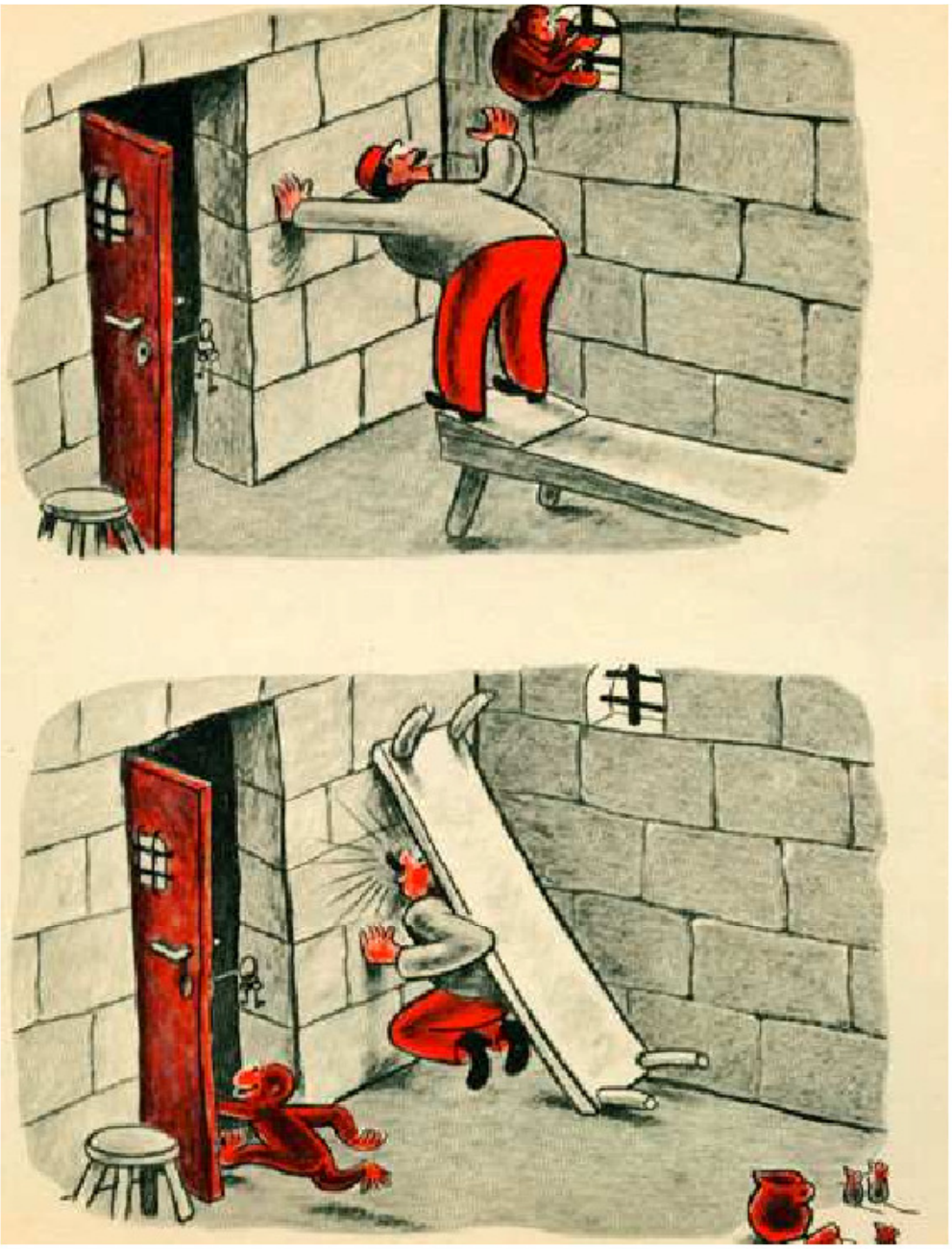

जॉर्ज जेल की कोठरी से निकलना चाहता था.
वो खिड़की पर चढ़ा और उसने सीखचों को खींचा.

तभी एक चौकीदार ने जॉर्ज को देखा.
चौकीदार, जॉर्ज को पकड़ने के लिए पलंग पर चढ़ा.
पर चौकीदार बहुत मोटा और भारी था.
पलंग एक तरफ को उठा और बेचारा चौकीदार गिर पड़ा.
फिर क्या था – जॉर्ज बिजली की तेज़ी से खुले दरवाज़े से भागा.

वो जेल की छत पर चढ़ा.

खुशनसीब था जॉर्ज, कि वो एक बन्दर था.

वो आराम से टेलीफोन के तारों पर चलता हुआ आगे बढ़ा.

जल्दी ही जॉर्ज, जेलर के सर पर कूदता हुआ

जेल से बाहर निकला.

वो अब मुक्त था !

जेल के बाहर सड़क पर एक गुब्बारे वाला खड़ा था.
वो गैस के गुब्बारे बेंच रहा था.
एक छोटी लड़की ने अपने भाई के लिए गैस का गुब्बारा खरीदा.
जॉर्ज ने उसे गौर से देखा.

जॉर्ज हमेशा की तरह उत्सुक था.
जॉर्ज को भी एक लाल रंग का गुब्बारा चाहिए था.
वो गुब्बारेवाले के पास गया और उसने भी
एक गुब्बारा लेने की कोशिश की. पर ....

एक गुब्बारे की बजाए,
गुब्बारों का पूरा गुच्छा टूट गया.
और अगले पल, हवा का एक झोंका
पूरे गुच्छे को आसमान में उड़ा ले गया.

अब ऊपर गुब्बारे उड़ रहे थे,
नीचे जॉर्ज उनकी डोरियाँ पकड़े था.

गुब्बारों के साथ बेचारा जॉर्ज
हवा में ऊपर, और ऊपर उठता गया.
ऊपर से शहर के मकान, खिलोनों जैसे लगने लगे.
और लोग, बिलकुल गुड्डे-गुडिए दिखने लगे.

बेचारा जॉर्ज, बुरी तरह से डर गया.
उसने कसकर डोरियों को पकड़ा.

शुरू में तो हवा बहुत तेज़ झोंकों में चली, पर बाद में हवा शांत हो गई.
और अंत में हवा बिल्कुल बंद हो गई. जॉर्ज अब तक बिल्कुल थक चुका था.
जल्दी-जल्दी वो नीचे आया और धम्म से ज़मीन पर गिरा!
वो एक ट्रैफिक-लाइट के ऊपर आकर गिरा. सड़क पर सब लोग घबरा गए,
हरेक को आश्चर्य हुआ. पूरा ट्रैफिक अस्त-व्यस्त हो गया.
जॉर्ज को समझ नहीं आया कि वो क्या करे. तभी उसने किसी को पुकारते सुना, “जॉर्ज!”
जब जॉर्ज ने नीचे देखा तो उसे उसका दोस्त दिखाई दिया,
वही बड़ी, पीली टोपी वाला आदमी!

उसे देख जॉर्ज बहुत खुश हुआ.
आदमी भी जॉर्ज को देख कर खुश हुआ.
जॉर्ज खम्बे से फिसलता हुआ नीचे आया.
फिर बड़ी, पीली टोपी वाले आदमी ने, जॉर्ज को अपने कंधे पर बैठाया.
उसने गुब्बारेवाले को पैसे दिए - सारे गुब्बारों के.
फिर जॉर्ज और वो आदमी एक कार में बैठे
और वहां से रवाना हुए.

वहां से वे सीधे चिड़ियाघर गए!
वो जॉर्ज के लिए वाकई
एक अच्छी जगह निकली!

अंत